

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-६४

नित नवल कमला चौधरी

६४

विदेह | गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय | खण्ड-६४

विदेह | आलोचना-संस्करण

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-६४

‘नित नवल कमला चौधरी’ : अनुवाद, कथा आ शब्दावली पर
समालोचना

समीक्षक आ सम्पादक : आशीष अनचिन्हार

विदेह • २०२६

साहित्यिक समीक्षा आ सम्पादकीय विवेचन

प्रकाशन-विवरण

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय — खण्ड ६४ । समीक्षक आ सम्पादक :
आशीष अनचिन्हार ।

समीक्षाधीन पोथी : गजेन्द्र ठाकुर । 'नित नवल कमला चौधरी' । २०२६ ।

प्रथम प्रकाशन : २०२६ । भाषा : मैथिली । मुद्रण-विन्यास : ६ × ९ इञ्च ।

© २०२६ गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर । सर्वाधिकार सुरक्षित ।

सम्पादकीय भूमिका

कमला चौधरीक अनुवाद, कथा-संसार आ वेशभूषा-विषयक शब्दावली पर गजेन्द्र ठाकुरक आलोचनाकें एहि खण्डमे पुनःपरखल गेल अछि । एहि तीनू विधाक प्रश्न अलग अछि; तें अध्ययनमे कथात्मक अर्थ, अनुवादक प्रमाण आ कोशीय शब्दार्थक भेद अक्षुण्ण रखल गेल अछि ।

गजेन्द्र ठाकुरक पुस्तक साहित्यिक व्यक्तित्वक समग्रता देखबाक एकटा प्रयत्न अछि । एहि समालोचनामे हुनकर पाठ-विभाजनक उपयोगिता, सामाजिक निष्कर्षक आधार, पाठान्तरक अनिश्चितता आ भविष्यक अनुसन्धानक सम्भावना पर विचार कएल गेल अछि ।

समालोचनाक मूल आधार गजेन्द्र ठाकुरक उक्त प्रकाशित अध्ययन अछि । पुस्तकमे उपस्थित साहित्यिक व्याख्याक मूल्याङ्कन ओकर अपन पाठ-विन्यास, सन्दर्भ आ प्रमाणक अनुसार कएल गेल अछि । मूल पुस्तकक सम्पूर्ण पाठ एहि खण्डमे पुनर्मुद्रित नहि अछि ।

विस्तृत अनुक्रमणिका : खण्ड ६४

१. खण्ड ६४ : समीक्षाक विषय आ मूल्याङ्कनक कसौटी.....	४
२. अनुवाद-विमर्श : 'मोनक पौती'क सामाजिक केन्द्र.....	४
३. भाषा-रूपान्तरण : कथ्यक समानता आ पाठक अन्तर.....	५
४. सम्पत्ति, सेवा आ उत्तरवयसक आत्मनिर्णय.....	६
५. 'समय-संकेत' : चौदह कथाक अलग-अलग ताप.....	७
६. कथानक, संवाद आ नारी-विमर्शक सीमा.....	७
७. चौदह कथाक पाठ-प्रसंग : पहिल सातक आलोचनात्मक भेद.....	८
८. चौदह कथाक पाठ-प्रसंग : अन्तिम सातक आलोचनात्मक भेद.....	१०
९. सांस्कृतिक कोशक नूतन क्षेत्र : वेशभूषा आ प्रसाधन.....	११
१०. देह, आभूषण आ सांस्कृतिक अर्थ.....	१२
११. अनुवादक आ कोशकारक साझा भाषिक चेतना.....	१२
१२. आलोचनाक उपलब्धि आ शेष प्रश्न.....	१३
१३. समेकित निष्कर्ष.....	१४

१. खण्ड ६४ : समीक्षाक विषय आ मूल्याङ्कनक कसौटी

गजेन्द्र ठाकुरक 'नित नवल कमला चौधरी' एकहि सर्जनशील व्यक्तित्वक तीन भिन्न परिचयकेँ संग अनैत अछि—बंगला कथाक मैथिली अनुवाद, मौलिक कथा-संग्रह आ वस्त्राभूषणसँ सम्बन्धित भाषिक अनुसन्धान। एहि तीनू क्षेत्रक अपन विधागत नियम अछि। अनुवादमे मूल आ लक्ष्यपाठक सम्बन्ध निर्णायक होइत अछि; कथामे कथन, पात्र आ सामाजिक अनुभव; आ शब्दावली-अध्ययनमे वस्तु, रूप, अर्थ तथा प्रामाणिक प्रयोग। एहि भेदकेँ बचौने बिना समग्र मूल्याङ्कन कएल जाए तँ साहित्यक विविधता एकटा सामान्य प्रशंसामे विलीन भऽ सकैत अछि। गजेन्द्र ठाकुरक पोथी एहि संकटसँ बहुत हद धरि बचबाक सचेत प्रयत्न करैत अछि।

एहि पोथीक समीक्षामे हमर प्रमुख प्रश्न ई अछि जे आलोचक अपन पाठसाक्ष्यक बलपर कतय ठोस निष्कर्ष धरि पहुँचैत छथि आ कतय हुनकर विवेचन सम्भावनाक स्तरपर रहि जाइत अछि। मूल रचनाक सारांश देब, पात्रक पक्ष लेब आ तर्कसहित साहित्यिक निर्णय देब तीनटा अलग काज थिक। गजेन्द्रक अध्ययन विस्तारपूर्वक पढ़बाक अवसर दैत अछि; मुदा ओकर विस्तारक उपयोगिता तखन प्रमाणित होइत अछि जखन सूक्ष्म विवरणसँ पाठक नव प्रश्न, नव अर्थ आ नव तुलनात्मक दृष्टि भेटय।

एहि कारण समीक्षाक क्रम मूल पुस्तकक तीन केन्द्रीय अध्यायक अनुसरण करैतो स्वतंत्र राखल गेल अछि। पहिने अनुवादक राजनीति आ पाठसाम्यक चर्चा, तकर बाद 'समय-संकेत'क कथा-दृष्टि, अन्तमे शब्दावली-ग्रन्थक भाषिक आधार। अन्तिम भागमे तीनूक परस्पर सम्बन्ध आ अध्ययनक सीमाक विवेचन अछि। ई पुनर्पाठ गजेन्द्र ठाकुरक आलोचनाक मूल्याङ्कन अछि; कमला चौधरीक तीनू प्राथमिक रचनाक स्थानापन्न नहि।

२. अनुवाद-विमर्श : 'मोनक पौती'क सामाजिक केन्द्र

'मोनक पौती' पर गजेन्द्र ठाकुरक विवेचन शशिताराक जीवनकेँ केवल वैधव्यक करुण कथा मानि नहि पढ़ैत। गृहस्थ जीवनमे सेवा आ अधिकारक अन्तर, सासुरक भूमि पर निर्णयक प्रश्न, परिजनक स्वार्थ-स्नेह आ उत्तरवयसक आत्मीयता—ई सब कथाक नैतिक संरचनाकेँ बदलैत अछि। समीक्षकक उपलब्धि एहि बातमे अछि जे ओ घरेलू घटना आ कानूनी-सामाजिक अधिकारक बीच सम्बन्ध स्थापित करैत छथि। गृहस्थीक व्यवहारमे जे काज त्याग कहल

जाइत अछि, ओहिमे स्त्रीक निर्णयस्वातन्त्र्य दबि जाए तँ त्यागक महिमा अपने-आप प्रश्नक घेरामे अबैत अछि।

गजेन्द्रक बारह पाठ-खण्डक योजना एकटा उपयोगी नजदीकी-पठनक साधन अछि। पहिल खण्डसभ शशिताराक सामाजिक स्थिति बनबैत अछि; मध्य भागमे उत्तराधिकार, रमेश मास्टरक प्रवेश आ राजबालाक प्रतिकार प्रश्न तीव्र करैत अछि; अन्तिम भागमे स्वत्व आ अपनत्वक अर्थ बदलैत अछि। एहि क्रमक कारण कथा-पात्रक निर्णय अचानक घटित चमत्कार नहि लगैत। मुदा बारह खण्डक सीमाकेँ आलोचनात्मक सुविधा मानब उचित अछि, मूल कथाकारक स्वीकृत अध्याय-विन्यास नहि। विभाजनसँ बनल अर्थ आ कथा-पाठमे प्रत्यक्ष निहित अर्थक दूरी पर ध्यान रखब जरूरी अछि।

शशितारा आ राजबालाकेँ केवल आदर्श आ प्रतिपक्षमे बाँटब साहित्यिक सरलीकरण होएत। राजबालाक व्यवहारमे परिवारक संसाधन, गृहस्थीक असुरक्षा आ अधिकारक प्रतिस्पर्धा प्रवेश करैत अछि। गजेन्द्र एहि जटिलताकेँ अनेक स्थलपर स्वीकार करैत छथि। स्त्री-अस्मिताक आलोचना तखने सार्थक अछि जखन एक स्त्रीक स्वाधीनताकेँ दोसर स्त्रीक मानवीयताक मूल्यपर प्राप्त विजय बनाकऽ नहि प्रस्तुत कएल जाए। एहि बिन्दुपर पोथी स्त्री-विमर्शक विस्तारक सम्भावना छोड़ैत अछि।

३. भाषा-रूपान्तरण : कथ्यक समानता आ पाठक अन्तर

गजेन्द्रक अध्ययनक अत्यन्त श्रमसाध्य हिस्सा बंगला-मैथिली प्रसंगक पचहत्तर तुलनात्मक स्थल आ पाँच प्रसंग-खण्ड अछि। ई संख्या अपनाके गुणवत्ता नहि, मुदा पाठसामग्रीकेँ जाँचयोग्य बनबाक प्रयत्नक परिचायक अछि। अनुवादक आलोचनामे कोन कथात्मक घटना सुरक्षित रहल, सम्बोधन कोना बदलल, भावक तीव्रता कतय फेर अर्थ ग्रहण कएलक—एहि प्रश्नक लेल अंशवार तुलना उपयोगी होइत अछि। जखन समीक्षक ‘कथ्य-साम्य’केँ ‘शब्दशः समानता’ नहि मानैत छथि, तखन हुनकर पद्धति एक महत्त्वपूर्ण सावधानी सीखबैत अछि।

मुदा अनुवादक मूलपाठ सम्बन्धी साक्ष्यक स्तर एकसमान नहि। बंगला शीर्षकक उल्लेख आ दोसर शीर्षकान्तर सम्बन्धी चर्चा पोथीमे प्रश्नक रूपमे उभरैत अछि। एहन अवस्थामा निश्चित मूल-संस्करण, पाठान्तर आ उपलब्ध तुलनीय सामग्रीक पहचान बिना प्रत्येक मिलानकेँ प्रत्यक्ष मूल-बंगला-मैथिली समतुल्यता कहल उचित नहि। गजेन्द्रक पाठमे स्वयं प्रमाणक कोटि आ

अनिश्चितताक उल्लेख अछि; समीक्षकक दायित्व ओही संकोचकें अन्तिम मूल्याङ्कनमे सेहो बचौने राखब अछि। जतेक ठोस स्थल प्रत्यक्ष पाठ पर निर्भर अछि, ओतेक स्पष्ट रूपें ओकर पाठाधार देखाएब चाही।

मैथिली अनुवादक उपलब्धि केवल बंगला शब्दक समीपवर्ती पर्याय चुनब नहि। घरक भीतर आदर, दूरी, स्नेह आ असहमतिक स्वर मैथिली क्रियारूप, सम्बोधन आ वाक्यलय सँ बनैत अछि। गजेन्द्र एहि स्तरपर चर्चा कऽ अनुवादक सामाजिक व्याकरण दिस ध्यान आकर्षित करैत छथि। मुदा कोनो स्थानीय वाक्य अधिक परिचित सुनाइत अछि तँ ओ अपने-आप सफल अनुवाद नहि; मूलक विडम्बना अथवा अपरिचित सांस्कृतिक रंग लुप्त भेल कि नहि, सेहो जाँचनीय अछि। लक्ष्यभाषाक स्वाभाविकता आ मूल पाठक अर्थान्तर दुनूकें संग राखब एहि अध्ययनक प्रमुख कसौटी रहबाक चाही।

४. सम्पत्ति, सेवा आ उत्तरवयसक आत्मनिर्णय

‘मोनक पौती’क सामाजिक अध्ययनमे गजेन्द्र ठाकुर द्वारा भूमि आ घरक अन्तर पर देल बल विशेष ध्यान देवाक योग्य अछि। जमीन आर्थिक संसाधन अछि; घर मानवीय सम्बन्धक स्थल। मुदा जखन स्त्रीक आवासाधिकार दोसरक दयापर निर्भर रहैत अछि, तखन घर सुरक्षित आश्रय नहि रहि सकैत। एहि कारण भूमि सम्बन्धी निर्णय शशिताराक भावुक उदारता मात्र नहि, आत्मसम्मानक सामाजिक प्रयोग बनैत अछि। ई आलोचनात्मक स्थापना पाठकें निराधार स्तुति सँ बाहर आनैत अछि।

सेवाभावक भीतर शक्ति-सन्तुलनक प्रश्न उठेनाइ पोथीक दोसर उपलब्धि अछि। बुढ़ापाक शरीरक देखभाल करनिहार व्यक्ति सदा निरपेक्ष नहि होइत; सेवा लेलनिहार सेहो अपन निर्णय छोड़बाक लेल बाध्य नहि। एहने संबंधमे सहचर्यक नूतन अर्थ उभरैत अछि। रमेश मास्टरक पात्र समीक्षकक लेल सहानुभूति आ समकक्षताक परीक्षा बनैत अछि। मुदा मानवीय संवेदना देखेनिहार पुरुषपात्रकें कथाक नैतिक उद्धारक घोषित करब उचित नहि; शशिताराक सक्रिय निर्णयकें केन्द्रीयता देल गेल अछि, कि नहि, से प्रश्न लगातार उपस्थित रहबाक चाही।

कथाक अन्तिम बहुअर्थी भावक उल्लेख गजेन्द्र बारम्बार करैत छथि। जीवन-प्रेम, भावात्मक विश्वास, सामाजिक पुनर्रचना आ निजी निकटता एक-दोसरासँ जुड़ल अछि; सबकें एके रोमानी निष्कर्षमे समेटब हड़बड़ी होएत। जखन आलोचक सम्भाव्य अर्थसभ अलग राखैत छथि, तखन पाठक अपन निर्णय

लेबाक स्थान पबैत अछि। एहि खुलापनकें पोथीक साहित्यिक विवेकक महत्त्वपूर्ण पक्ष मानल जा सकैत अछि।

५. 'समय-संकेत' : चौदह कथाक अलग-अलग ताप

कमला चौधरीक चौदह कथाक अध्ययनमे गजेन्द्र ठाकुर शीर्षक-क्रम नहि तोड़ैत छथि। 'समय-संकेत', 'पैघ लोक', 'बदला', 'धूरी', 'गुलाब काकी', 'युद्ध', 'गुणनफल' आ 'आकांक्षा' सँ शुरू भेल ई क्रम 'अहिवातक हार', 'काल-चक्र', 'दृष्टिकोण', 'निर्णय', 'बाटे बिलायल पानि' आ 'अपराजिता' धरि पहुँचैत अछि। पोथीक एहि संरचनासँ पाठक एकहि कथाकें सम्पूर्ण संग्रहक प्रतिनिधि मानबाक त्रुटिसँ बचि सकैत छथि। शीर्षक मात्रसँ अर्थ-निर्णय नहि, कथानक आ पात्रक ठोस व्यवहार आवश्यक अछि।

गजेन्द्रक कथा-विवेचनक सबल पक्ष ई अछि जे ओ स्त्री-जीवनकें केवल दाम्पत्यक एकटा प्रश्नमे सीमित नहि राखैत छथि। वर्ग-प्रतिष्ठा, श्रमक नैतिक मूल्य, वृद्धावस्था, पारिवारिक अपेक्षा आ समाजक बदलैत भाषा कथासभमे परस्पर संवाद करैत अछि। 'पैघ लोक'क प्रतिष्ठा-विमर्श आ 'गुणनफल'क परिणाम-चिन्ता जेकाँ भिन्न शीर्षक पाठकें मूल्य-व्यवस्थाक अलग धरातल पर लऽ जाइत अछि। मुदा यथार्थवादी कथासमीक्षा लेल कथावाचकक दूरी, संवादक विश्वसनीयता आ घटनाक आकस्मिक मोड़ परो विचार चाही।

एहि चौदह कथामे हर ठाम स्त्री-पात्रक सफलता खोजब उचित नहि। 'अहिवातक हार', 'निर्णय' अथवा 'अपराजिता'क शीर्षक संघर्षक अलग-अलग नैतिक स्वभाव सुझबैत अछि; पहिलमे हानि, दोसरमे विकल्प आ तेसरमे जिजीविषाक संकेत अछि। आलोचक जखन कथा-परिणामसँ बेसी पात्रक चुनाव देखैत छथि, तखन संग्रहक अन्तर्विरोध सामने अबैत अछि। समीक्षाक सबसँ उपयोगी प्रश्न ई अछि जे पात्रक प्रतिरोध कथाक घटना बनि पबैत अछि अथवा अन्तमे लेखकक घोषणात्मक उपदेश रहि जाइत अछि।

६. कथानक, संवाद आ नारी-विमर्शक सीमा

गजेन्द्र ठाकुर 'समय-संकेत'क कथा-शिल्पपर पृथक विचार करैत छथि। कतिपय कथा निकट पारिवारिक घटना सँ सामाजिक अर्थ बनबैत अछि; कतिपयमे शीर्षक अन्तिम विडम्बनाक ओर पाठकें आगाँ बढ़बैत अछि। ई भिन्नताकें स्वीकार करब

आलोचनाक विधागत सटीकता अछि। छोट कथामे छूटल प्रसंग, मौन आ संकेतक वजन लम्ब रचनासँ अलग होइत अछि। कथा-प्रस्तावना जँ पहिले सिद्धान्त घोषित कऽ दैत अछि, तखन पात्रक असमंजसक स्वतन्त्र अनुभव घटि सकैत अछि; एहि जोखिम पर समीक्षकक प्रश्न उचित अछि।

स्त्री-विमर्शक नाम लैतहि प्रत्येक स्त्री-पात्रकेँ आदर्श आत्मनिर्भर व्यक्तित्व मानि लेब समालोचना नहि। लेखिकाक सामाजिक सहानुभूति आ कथा भीतरक संरचनात्मक परिणामक बीच जँ अन्तर अछि, तकर उल्लेख चाही। गजेन्द्र संग्रहक उपलब्धि संग अन्तर्विरोध परो चिन्ता करैत छथि। एकरा आगाँ बढ़बैत कहब उचित जे वर्ग, शिक्षा, आयु आ पारिवारिक आश्रयक भिन्नता स्त्रीक स्वतन्त्र निर्णयक सीमा बदलैत अछि; सभ पात्रपर एके स्वतंत्रताक मापदण्ड नहि लागू होइत।

भाषिक स्थानीयताक प्रश्न सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। मैथिली भाषाक स्वाभाविकता केवल दू-चारि परिचित शब्दसँ नहि बनैत; सम्बन्ध-सूचक प्रत्यय, आदरस्तर, लोकोक्ति आ मौनक अवसर मिलिकऽ संवादकेँ जीवित करैत अछि। गजेन्द्रक पाठ एहन संरचनाक पहचानक आरम्भ दैत अछि। भविष्यक विस्तृत कार्यमे कथावार संवादक चयनित छोट नमूना तथा कथावाचकक हस्तक्षेपक तुलना जोड़ला सँ निर्णय आओर प्रमाणबद्ध होयत।

७. चौदह कथाक पाठ-प्रसंग : पहिल सातक आलोचनात्मक भेद

‘समय-संकेत’क केन्द्रमे सुखना आ बिलटीक श्रमजीवन तथा राजा बाबूक प्रभुत्वक तनाव अछि। गजेन्द्र एहि त्रिकोणमे ग्रामीण सत्ता आ असुरक्षाक संरचना देखैत छथि। कथाक मुख्य बल दबावक कारण व्यक्ति अधिकारक बोली बोलबासँ पहिने डरैत अछि, एहि सूक्ष्म अनुभवमे अछि। आलोचक जँ केवल शोषक-शोषितक द्वैतमे कथा पढ़ताह तँ भयक सामाजिक अभ्यास आ पात्रक मनःस्थितिक विशिष्टता छूटि सकैत अछि। गजेन्द्रक विवेचन एहि सूक्ष्मता धरि पहुँचबाक दिशा दैत अछि।

‘पैघ लोक’मे प्रीताक श्रम, बेटी नीलूक भविष्य आ साधनसम्पन्न घरक व्यवहारकेँ एक संग रखब कथाक तीक्ष्णता बनबैत अछि। पैघपन धनसँ निर्धारित अछि कि मानवीय व्यवहारसँ, ई प्रश्न कथाक शीर्षकमे बसल अछि। गजेन्द्रक वर्गीय व्याख्या उचित आधार रखैत अछि; मुदा प्रीताक मातृत्वकेँ केवल सहानुभूति

प्राप्त करवाक उपकरण नहि मानब आवश्यक अछि। ओकर चुनाव, चिन्ता आ श्रम कथाक नैतिक केन्द्र अछि।

‘बदला’मे रीता भाउड़ी, हरिचरण आ सतीशक सम्बन्ध रोग आ सेवाक माध्यम पुनःपरखल जाइत अछि। पुरान आघातक स्मृति वर्तमान दयाक मांगसँ टकराइत अछि। एतय ‘बदला’ प्रतिहिंसाक सहज समाधान नहि; सम्बन्धक नूतन अर्थ बनबाक अवसर हो सकैत अछि। गजेन्द्रक आलोचना पात्रक आचरणक नैतिक पक्ष देखबैत अछि; कथा-समाप्तिमे भावुक समाधान कतेक विश्वसनीय अछि, से शिल्पगत प्रश्न सेहो आवश्यक अछि।

‘धूरी’क शीला एक दुर्घटनाक बाद शोकक संग-साथ जीविकाक असुरक्षा अनुभव करैत छथि। एहि कथा लेल घरक रूपक विशेष सार्थक अछि : जखन परिवारक आर्थिक आधार डोलैत अछि, तँ स्त्रीक श्रम केवल भावनात्मक सहारा नहि रहैत। गजेन्द्र ई परिवर्तनक आत्मनिर्भरता सँ जोड़ैत छथि। मुदा कथाक चुनौती आर्थिक साधनक वास्तविकता दिखाबयमे अछि; आशावादी उपसंहार मात्रसँ आत्मनिर्भरता सिद्ध नहि होइत।

‘गुलाब काकी’मे वृद्ध स्त्रीक अनदेखल जीवन कथावाचिकाक दृष्टिसँ खुलैत अछि। समीक्षकक संग पाठककें पूछबाक पड़ैत अछि जे काकीक आवाज प्रत्यक्ष उपस्थित अछि कि सदिखन दोसर पात्र ओकर प्रतिनिधित्व करैत अछि। एहन दृष्टिकोणक अन्तर करुणाक मूल्य कम नहि करैत; बल्कि कथा-शिल्पक नैतिक प्रश्न सामने अनैत अछि। गजेन्द्रक वृद्धावस्था-विमर्श एतय विशेष उपयोगी अछि।

‘युद्ध’मे राजेश आ चुन्नूक पारिवारिक संवाद पीढ़ीक अधिकारक संघर्ष बनि जाइत अछि। घरमे मतभेदकें युद्धक भाषा देब लेखकक सचेत अतिशयोक्ति अछि। आलोचनामे ई देखब चाही जे असहमति कखन वास्तवमे सम्बन्धक संकट बनैत अछि आ कखन समाजक बदलैत मूल्यक आवश्यक टकराव। गजेन्द्र शीर्षक आ सामाजिक प्रश्नक सम्बन्ध स्पष्ट करैत छथि; संवादक स्वर पर विस्तृत परीक्षण एहि विवेचनकें आरो पुष्ट करय।

‘गुणनफल’मे मीरा आ सुनीलक दाम्पत्यक भीतर समय, रुचि आ स्त्रीश्रमक मूल्यक गणना चलैत अछि। शीर्षकक गणितीय रूपक एहि बातक आलोचना अछि जे गृहस्थीकें केवल आय-व्ययक हिसाबें नहि बुझल जाए। ककर श्रम देखाइत अछि आ ककर श्रम निःशब्द रहैत अछि, ई प्रश्न समीक्षककें पात्रक व्यवहारसँ प्रमाणित करवाक चाही। गजेन्द्रक पाठ एहि बहसक क्षेत्र बनबैत अछि।

८. चौदह कथाक पाठ-प्रसंग : अन्तिम सातक आलोचनात्मक भेद

‘आकांक्षा’मे छविक निजी इच्छा आ परिवारक संरक्षणक तर्कक टकराव मुख्य अछि। संरक्षकक सदाशयता स्वतः युवक अथवा युवतीक आत्मनिर्णयक विकल्प नहि होइत। गजेन्द्रक व्याख्या व्यक्तिगत भविष्यमे निर्णयक अधिकार पर बल दैत अछि। मुदा पात्रक परिस्थिति आ उपलब्ध विकल्पक वास्तविक सीमा देखब जरूरी अछि; केवल इच्छाक घोषणा कथाक विजय नहि।

‘अहिवातक हार’ दहेज, विवाह-प्रतिष्ठा आ अमोलाक निर्णयसँ बनल कथा अछि। राम बाबूक सोच समाजक प्रचलित सुरक्षित व्यवस्थाक अनुगमन करैत अछि, मुदा ओही ‘सुरक्षा’मे स्त्रीक इच्छा कुचलि सकैत अछि। गजेन्द्र एहि अन्तर्विरोधकें स्त्री-अधिकारक प्रश्नसँ जोड़ैत छथि। शीर्षकमे हारक अर्थ किसकर पराजय अछि—व्यक्ति, परिवार अथवा रूढ़ि—ई अर्थ कथा-परिणामक आधारपर जाँचल जाए।

‘काल-चक्र’क प्राण काकी आ सुधा बदलैत शिक्षा, रोजगार आ विवाहक मानदण्डक दू समय प्रतिनिधित्व करैत छथि। समीक्षक एतय नव पीढ़ीक पक्ष लऽ स्थिर निष्कर्ष देबाक बदला पुरनका पीढ़ीक अनुभवक ऐतिहासिकता सेहो समझबैत छथि तँ कहानीक अर्थ बढैत अछि। गजेन्द्रक काल-विवेचन एहि बहुपीढ़ीय अनुभव लेल उपयोगी अछि।

‘दृष्टिकोण’मे रंजना आ राकेशक सम्बन्ध शारीरिक असमर्थतापर समाजक पूर्वाग्रहकें प्रश्न करैत अछि। बाहरी रूपक तुलना सँ व्यक्तिक समग्र मानवीयता नापल नहि जा सकैत। गजेन्द्रक व्याख्या एतय नैतिक रूपसँ सामर्थ्यवान अछि; मुदा विकलांगताकें केवल ‘प्रेरणादायक विजय’क रूपमे लिखब दोसर सरलीकरण होएत। पात्रक सहज सम्बन्ध आ दैनिक कठिनाई दुनूकें पढ़ब आवश्यक अछि।

‘निर्णय’क पत्रात्मक विन्यास विशेष ध्यान देबाक योग्य अछि। रतन द्वारा मुना बहिनक नाम लिखल पत्रक माध्यमसँ घटना पाठक समक्ष स्मरण रूपमे अबैत अछि। लेखक जकरा कहैत छथि, कथाक समग्र सत्य ताहिसँ अधिक अथवा अलग भऽ सकैत अछि। गजेन्द्रक निर्णय-विमर्शकें एहि कथन-दूरीक संग जोडल जाए तँ पत्रात्मक शिल्प अपन पूर्ण महत्त्व पबैत अछि।

‘बाटे बिलायल पानि’मे देवकी बाबूक वृद्धावस्था, परिवारक व्यस्तता आ मालतीक संग सम्भव सहचर्य समाजक असुविधाजनक प्रश्न उठबैत अछि। वृद्धावस्थाक भावनात्मक जीवनकें सेवा-दानक रूपकमे सीमित नहि करब चाही।

गजेन्द्रक पाठ 'मोनक पौती'क उत्तरवयसक आत्मीयतासँ एक रोचक संवाद स्थापित करबाक अवसर दैत अछि, मुदा दुनू रचनाक अलग सामाजिक परिस्थिति बनाएल रहय।

'अपराजिता'मे यशोधराक बारम्बार प्रयत्नक कथा दायरा बनबैत अछि। असफलता जीवनक अंश अछि, आ पुनर्प्रयत्न व्यक्तिगत इच्छाशक्ति संग अवसरक सामाजिक संरचनापर निर्भर करैत अछि। गजेन्द्रक जिजीविषा-विमर्श प्रशंसनीय अछि; तखनो पाठकें पूछबाक चाही जे कथामे सफलता ककर परिश्रम आ ककर सहयोगसँ बनैत अछि। एहन प्रश्न प्रेरणाक कथाकें सामाजिक यथार्थसँ जोड़ैत अछि।

९. सांस्कृतिक कोशक नूतन क्षेत्र : वेशभूषा आ प्रसाधन

'मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली'क अध्यायवार अध्ययन कमला चौधरीक भाषा-अनुसन्धानकें साहित्यिक उपलब्धिसँ पृथक चिन्हित करैत अछि। वस्त्र, आभूषण आ प्रसाधनक शब्द देहक सामाजिक अर्थसँ जुड़ल अछि। कोन वस्तु के पहिरैत अछि, कोन अवसरपर धारण कएल जाइत अछि, ओकर बनावट आ स्थानीय नाममे की भेद अछि—ई प्रश्न सांस्कृतिक अध्ययनकें केन्द्रीय बनबैत अछि। गजेन्द्र पुस्तकक द्वादश अध्यायक क्रमकें इतिहास, साहित्यिक साक्ष्य आ भाषाविज्ञानक तीन चरणमे पढ़ैत छथि; एहि क्रमसँ ग्रन्थक अनुसन्धान-स्थापत्य स्पष्ट होइत अछि।

प्रथम तीन अध्याय परम्परा आ परिवर्तनक विस्तृत आधार बनबैत अछि। चारिमसँ छठम अध्याय प्राचीन, मध्यकालीन आ आधुनिक मैथिली साहित्यमे उपस्थित वस्त्रादिक नाम खोजैत अछि। सातमसँ नवम अध्याय वेश, आभूषण आ प्रसाधनक शब्द-सम्पदा पर केन्द्रित अछि; दशमसँ द्वादश अध्याय ध्वनि, शब्द-विचार आ उपसर्ग-प्रत्ययक विवेचन दैत अछि। गजेन्द्रक समीक्षा एहि क्रमकें महत्त्व देइत अछि। परम्पराक नाम पर ऐतिहासिक निरन्तरताकें स्वतः सिद्ध मानब, तथापि, तर्कसंगत नहि: एकहि नामक वस्तु सामग्री, बनावट वा उपयोगमे बदलि सकैत अछि।

शब्द-संग्रहक आलोचना लेल नामक शुद्ध वर्तनी सँ बेसी जरूरी ओकर सन्दर्भ अछि। वस्तुक आकृति, निर्माण-कौशल, क्षेत्रीय भिन्नता, समाजगत व्यवहार आ समयक परिवर्तनक प्रमाण उपलब्ध होएब चाही। गजेन्द्रक पाठमे कोनो शब्दक सूची मात्रसँ सम्पूर्ण समाजक व्यवहार सिद्ध नहि करबाक सावधानी देखाइत

अच्छि। एहि सावधानीकें व्यवस्थित सर्वेक्षण-पद्धतिमे बदलल जाए तँ कोशविज्ञान आ वस्तुसंस्कृति दुनूक लाभ होयत।

१०. देह, आभूषण आ सांस्कृतिक अर्थ

वस्त्रक नाम सामाजिक स्तर, पेशा, ऋतु, लिङ्ग आ अनुष्ठानसँ जुड़ल रहैत अछि। आभूषणक नाम मात्र सुन्दरता नहि, वैवाहिक स्थिति, सम्पत्तिक रूप, कौटुम्बिक उपहार आ स्त्रीक स्वत्वक प्रश्न सेहो लऽ अवैत अछि। प्रसाधनक व्यवहारमे शरीरक देखभाल, धार्मिक संकेतन आ लोकप्रचलित सौन्दर्यमानक जोड़ल अछि। गजेन्द्रक भाषिक अध्ययन एहि तीनू क्षेत्रकें एके कोशीय ढाँचामे समेटबाक बदला अलग रखने अछि; ई उचित निर्णय अछि।

मुदा एतय वर्गीकरणक सीमा सेहो अछि। एकहि वस्तुक नाम अलग गाममे बदलैत अछि; एकहि शब्द कखनो वस्तु, कखनो अंग आ कखनो क्रियाकें सूचित करैत अछि। साहित्यिक उद्धरणमे ओ शब्द रूपक रूपमे आबि सकैत अछि। कोनो पद साहित्यिक पाँतिमे भेटलासँ ओकर वर्तमान प्रचलन प्रमाणित नहि होइत। एहन अर्थभेद स्पष्ट करबाक लेल चित्र, वक्ताक विवरण, वर्ष आ स्थानसहित मौखिक उदाहरण चाही; बिना एहि प्रमाणक सांस्कृतिक निष्कर्ष सावधानीसँ लिखल जाए।

गजेन्द्र द्वारा उपसंहार आ परिशिष्टक पृथक विवेचन महत्त्वपूर्ण अछि। शब्दसूची, सन्दर्भग्रन्थावली आ अशुद्धि-सूचीक स्थान मुख्य तर्कसँ अलग होइत अछि, मुदा शोधक विश्वसनीयता लेल ओ सभ उपयोगी अछि। पुस्तकक सूचक-संरचना आ प्रमाणक सीमा पर पूछल प्रश्न कोनो लेखकक महत्त्व घटेबाक लेल नहि, भविष्यक पुनर्सम्पादनकें मजबूत करबाक लेल अछि।

११. अनुवादक आ कोशकारक साझा भाषिक चेतना

कमला चौधरीक अनुवाद आ शब्दावली-ग्रन्थ दू अलग विधाक काज अछि, मुदा दुनूक पाछाँ भाषाक सामाजिक जीवनक प्रति अनुराग देखाइत अछि। अनुवादमे सम्बन्धक जटिल अर्थ स्थानीय वाक्यलय सँ प्रकट होइत अछि; शब्दावलीमे लोकप्रयोगक रूप ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक जानकारी पहुँचबैत अछि। गजेन्द्र ठाकुरक अध्ययन एहि बन्धनकें स्पष्ट रूपेँ देखबैत अछि। एहि दृष्टिसँ कमला चौधरी केवल कथा कहनिहार अथवा शब्द संग्रह करनिहार नहि, भाषा-व्यवहारक अनेक रूपक पाठक छथि।

तथापि एहि समानता सँ विधागत भिन्नता नहि मेटाएब चाही। अनुवादक चयन, संक्षेप, वाक्य-अनुकूलन आ अर्थकेँ बचाबय लेल कखनो शब्द बदलि सकैत छथि; कोशकार लेल एहि रूपान्तरक स्रोत, काल आ सामाजिक प्रसंग दर्ज करब आवश्यक होइत अछि। कथाकार पात्रक बोलीकेँ कलात्मक उद्देश्यसँ रूप दैत छथि। गजेन्द्रक पोथी एहि तीनू प्रकारक सत्यकेँ अनेक अवसरपर अलग रखैत अछि, आ पाठककेँ तुलना करबाक समृद्ध अवसर दैत अछि।

साझा भाषिक दृष्टिक ई स्थापना पोथीक प्रमुख योगदान अछि, मुदा एकर प्रमाण हमेशा रचनाक भीतर सँ उठबाक चाही। आलोचकक पसिनक लोकशब्द वा सामाजिक विचारकेँ रचनाकारक स्पष्ट घोषणाक रूपमे निबद्ध नहि करब चाहिए। पाठसाक्ष्य, आलोचनात्मक अनुमान आ भावी अनुसन्धानक सम्भावना—तीनू प्रकारक कथनक दूरी बाँचल रह्य, तखने अध्ययन टिकाउ बनत।

१२. आलोचनाक उपलब्धि आ शेष प्रश्न

‘नित नवल कमला चौधरी’क पहिल उपलब्धि स्रोतविस्तार अछि : तीन विधाक अलग-अलग अध्ययन एक ठाम भेटैत अछि। दोसर उपलब्धि आलोचक द्वारा अध्यायक्रम, कहानीक्रम आ पाठखण्डक पृष्ठक्रम बचौने रखब अछि। तेसर उपलब्धि स्त्री-अधिकारक प्रश्नकेँ भाषा आ पारिवारिक व्यवहारक सूक्ष्म रूप सँ जोड़ब अछि। चौथ उपलब्धि कोशीय सामग्रीमे सामाजिक स्मृति आ प्रयोगक अर्थ देखब अछि। ई सब गजेन्द्रक पुस्तककेँ साधारण परिचय-पुस्तिका सँ अलग करैत अछि।

सीमा सेहो निश्चित अछि। अनुवाद-तुलना लेल मूल बंगला पाठक प्रमाणक अवस्था प्रत्येक स्तरपर समान स्पष्ट नहि; शब्दावलीक लोकव्यवहारक परिवर्तन प्रमाणित करबाक लेल वर्तमान क्षेत्र-सर्वेक्षण आवश्यक होएत; कथानक-विवेचनमे कखनो कथ्यक नैतिक पक्ष शिल्पक सूक्ष्म परीक्षणसँ आगाँ निकलि जाइत अछि। कोनो अध्यायक विस्तार ओकर निर्णायकता सिद्ध नहि करैत। समग्र पोथीकेँ जँ पुनर्सम्पादित कएल जाए तँ शोध-दावा आ व्याख्यात्मक सम्भावना अलग सँ चिन्हित करब उचित होएत।

एहि सीमाक बावजूद गजेन्द्र ठाकुरक आलोचनामे पाठसँ लगाव आ अनिश्चितताकेँ मानबाक प्रवृत्ति महत्त्वपूर्ण अछि। हुनकर प्रश्न साहित्यक गुणसूची बनबैत नहि सकैत; ओ पारिवारिक सत्ता, लेखकीय संवाद आ भाषा-

स्मृतिक सम्बन्ध तक पहुँचैत अछि। ई ऊर्जा मैथिली आलोचनामे विस्तृत पाठक-पद्धतिक लेल उपयोगी आधार बनैत अछि।

१३. समेकित निष्कर्ष

कमला चौधरीक साहित्यिक व्यक्तित्वक तीन रूप गजेन्द्रक पुस्तकमे समाहित अछि, मुदा ओकर समाहारक मूल्य एकरूपतामे नहि, अन्तर्सम्बन्धक विवेकमे अछि। शशिताराक स्वत्वक प्रश्न कथा भीतर अछि; 'समय-संकेत'क सामाजिक तनाव अलग कथा-संसारमे पसरल अछि; वेशभूषाक कोश लोकजीवनक शब्द-इतिहास सँ जुड़ैत अछि। एहि तीनूक साझा धरातल भाषा आ सामाजिक परिवर्तन अछि।

आशीष अनचिन्हारक एहि पुनर्पाठमे गजेन्द्र ठाकुरक श्रमक प्रशंसा आ हुनकर निर्णयक आलोचनात्मक परीक्षण समान रूपेँ आवश्यक मानल गेल अछि। जतय पाठ साक्ष्य दैत अछि, ओतय निष्कर्ष दृढ़ हो; जतय स्रोत अपूर्ण अछि, ओतय प्रश्न खुलल रहय। 'नित नवल कमला चौधरी'क दीर्घकालीन उपयोगिता एही प्रमाणशील, बहुविध आलोचनात्मक पद्धति सँ निर्धारित होएत।

सन्दर्भ-सूची

ठाकुर, गजेन्द्र। नित नवल कमला चौधरी। विदेह, २०२६। (समीक्षाधीन मुख्य पोथी)।

गजेन्द्र ठाकुरक उक्त ग्रन्थमे विचाराधीन प्रमुख रचनासभ :

१. आशापूर्णा देवी। मोनक पौती। मैथिली अनुवाद : कमला चौधरी। पल्लवी प्रकाशन, २०२२।
२. कमला चौधरी। समय-संकेत। कथा-संग्रह, २०१०।
३. कमला चौधरी। मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-६४

‘मोनक पौती’क अनुवाद आ शशिताराक आत्मनिर्णयक कथा
‘समय-संकेत’क चौदहो कथाक स्वतंत्र पाठ
वेश-भूषा आ प्रसाधन-शब्दावलीक बारह अध्यायक अध्ययन
मैथिली साहित्यक स्रोताधारित समीक्षाक व्यापक प्रस्तुति।

मूल पाठ □ विस्तृत आलोचना □ सम्पादकीय चयन



विदेह



विदेह डिजिटल संग्रह